प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 35 * MAY 2010 - a *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	May 01. Mp3	*37*		V.V. Imp		मैं ही कल्याण स्वरूप हूँ क्यों कि सच्चि०हूँ दृश्यमान तीनों शरीर मेरी माया हैं, भीतर द्रष्टा **जीव मेरा ही स्वरूप है**	A
2	May 02. Mp3	25				व्यापक अग्नि की भाँति नि०नि०ब्रह्म अव्यवहारी एवं स०सा०ब्रह्म –अवतार– व्यवहारी है, चार प्रकार के भक्त	*
3	May 03. Mp3	*53*				अर्जुन तेरा स्वरूप सच्चि० है, ये जगत माया का कार्य यानि मिथ्या है पाँच भ्रान्ति व उनकी निवृत्ति के उपाय	B
4	May 04. Mp3	27				भगवान के ज्ञान व समर्पण से भक्त भगवत्रूप ही हो जाता है नवधा भक्ति, भक्ति से अविनाशी सुख मिलता है	*
5	May 05. Mp3	*47*		V.V. Imp		सच्चिदानंद तो मैंही हूँ शेष सब असत–जड–दुःखरूप माया है इनों शरीरों का निरूपण,सब में बैठकर मैंही देखता हूँ	*C*
6	May 06. Mp3	31				जा०स्व०सु०–३हाथ प्रकृति के भीतर सच्चि०ब्रह्म है, अर्जुन वही तेरा स्वरूप है,यह अपरोक्ष ज्ञान गुरु ही कराता है	*
7	May 07. Mp3	38				गीता अ०२/५५–६३:समाधि में स्थित **'स्थितप्रज्ञ' के लक्षण** विषय सुख क्षणिक है,आत्म सुख ही नित्य एवं श्रेष्ठ है	**
8	May 08. Mp3	32				दुःखालय संसार से मुक्ति के लिये भगवान का ज्ञान आवश्यक है भगवत प्राप्ति में इष्ट चार कृपाओं का वर्णन	*
9	May 09. Mp3	32				ऐसा परमकल्याण स्वरूप तो मैंही हूँ क्यों कि मैं सच्चि०हूँ, मैंही सत्य हूँ मेरी माया से ही नामरूप जगत भासता है	*
10	May 10. Mp3	33				भगवत प्राप्ति में इष्ट चार कृपाओं का वर्णन भगवत कथा एवं ससा०–निनि० तत्त्व निरूपण नवधा भक्ति	**
11	May 11. Mp3	*47*				अर्जुन तुम्हारा स्वरूप सच्चि०है अतः तुम अपने स्वरूप में जागो व शान्त–सुखी होओ, आत्मा–परमात्मा अभेद हैं	**
12	May 12. Mp3	*48*				श्रीमद्भगवत्गीतामहात्म्य सम्पूर्ण जगत त्रैगुण्य है, सत्वगुण में ही ब्रह्म ज्ञान उदय होता है जीव के चार दोष	Imp
13	May 13. Mp3	30				भगवान जगतरूपी विवर्त के निमित्तोपादान कारण हैं,आत्मा के अज्ञान से जगत भासता है, आत्मज्ञान ही औषधि है	**
14	May 14. Mp3	*45*		V.V. Imp		अर्जुन,तेरा स्वरूप सच्चि०ही है, दृश्यमान जगत मेरी माया व द्रष्टा जीव मेरा ही स्वरूप है,द्रष्टा–दृश्य रही पदार्थ हैं	*
15	May 15. Mp3	32				ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति भ०सच्चि०पुरुष हैं,जगत पुरुष की छाया है,सृष्टिक्रम–लयचिन्तन योग,छाया से पु०की खोज	**
16	May 16. Mp3	33				परम्ब्रह्म और शब्दब्रह्म :: कर्म–उपासना–ज्ञान त्रिकाण्डमय वेद मल–विक्षेप–आवरण की निवृत्ति हेतु है	
17	May 17. Mp3	54				व्यापक ब्रह्म–नि०नि०,ईश्वर–स०नि० एवं रामकृष्ण अवतार–स०सा० ४ प्रकार के भक्त, ज्ञानी भक्त सर्वश्रेष्ठ है	*
18	May 18. Mp3	33				परम्ब्रह्म और शब्दब्रह्म–त्रि०वेद,रामकृष्ण अवतार–साधुरक्षा,दुष्टदलन व वेदोपदेश को शिक्षा हेतु प्रत्यक्ष कर दिखाया	*
19	May 19. Mp3	*45*				हमारी आत्मा का स्वरूप सच्चि०है,मायाकृत शरीर नाशवान हैं,विद्सत्तानाम–निनि०ब्रह्म है,विद्विचारणा–स०नि०ईश्वर,ससा० जीव है	Imp
20	May 20. Mp3	*28*				पुरुष से छाया अभिन्न है,भ०सच्चि० पुरुष हैं,माया छाया ही भ० के सानिध्य में जगत रूप धर लेती है, कारण से कार्य अभिन्न	Imp
						होता है, छाया पुरुष में ही लीन होती है जैसे तरंग जल में, जल रूप द्रष्टा राम व तरंगरूप दृश्यमान जगत सीता हैं ।	